

021/-32-

25/8/-
+ निर्दिष्ट

110/25

२७/८/२५ पत्रां प्रेषण कृपया। आशुषी, वर उसते आशुषी उप. जरी प्रेषण के लिये मन्त्र
 अथवा उसते आशुषी को २-३ बार आजाऊ किन्तु
 जहाँ मन्त्र उप. जरी हुमा प्रवालय जहाँ मन्त्र
 के कृपया पुनः, यहाँ व उसते आशुषी को आवका
 किन्तु वर लोकीय मन्त्र उप. जरी हुमा।
 मन्त्र सब ए. क. प्र. मन्त्र. से व्यापित की. यही।
 ही पत्रां निर्दिष्ट व्यापित होना सब लोकीय व मन्त्र प्रेषण
 के लिये मन्त्र ही उप. जरी मन्त्र, यहाँ, यहाँ, ही पत्रां

मन्त्र
 अति. सं. आशुषी

APR